5492

F-6

Complete

नं० ५४६२-घ

आरती (भक्तिकाव्यम्)

पत्राणि ६ (षट्) (संपूर्णम्)

~~नं० १००१~~

139

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ पट्टलेश्व
रती पुष्पकी माला॥ कालीका
गनपे श्री कृष्णगोपाला॥
हरहर भक्तकरे॥ ठाकुरध्या
नधरे॥ शिवजी तिरनकरे॥

श्री ब्रह्मावेदपढे ॥ यमघासतदी
१ नै ॥ आरतीकीजै ॥ राजाराम
चंद्रकीजे ॥ ॥ हमरी आरती
देवकीनंदन ॥ भक्तउदार
ाश्रमरांतकंदन ॥ हराह

रभक्तकरो।ठाकुरध्यानधरो
शिवजीनितकरो॥ब्रला·
वेदपडो॥यमब्राम्हनदीजे
आरतीकीजे॥राजा।रामसेव
द्रकीजे॥१॥नोमरीआरती·

श्रा

१

2

त्रिभुवनमोहैः॥ गारुडसिंचा
सनराजाणामंवडमोवे॥ ह
हहभक्तकरो॥ ठाकुराध्या
नधरो॥ शिवजीतिनतकरो
बलोवदपक्षो॥ यमत्रातनः

दीजै। आरती कीजै रामनाराम
चंद्र कीजै॥३॥ चौथ आरती चौ
दशभुजा॥ पंचम नारायण स्वा
मी॥ अवतार ही हुआ॥ दूरह्म भ
कवलो॥ ठाकुर ध्यान धरो॥ पि

श्री
३

वजीति रत्नकोरो। ब्रह्मावेदप
डो॥ यमग्रासत दीजै॥ श्रीमती
कीजै राजा राम चंद्रकौजै॥ ५॥
पंचमी आरती॥ राम को भावे
सीता रामजी को हर हर ताम

३

जसगावै ॥ हाहा भक्तकौ ॥ टा
कुरध्यानधरो ॥ शिवजीनि
तकरो ॥ ब्रह्मवेदपढो ॥ यम·
ग्रासतनदीजे ॥ प्राणनोकीजैरा
जारामचंद्रकौजै ॥ ५ ॥ बहुमी

ग्रा
८

4

ग्यानी है सै सुनावै ॥ जन्म मर
नै मेतही ग्यावै ॥ दादू भमकक·
रो ॥ ठाकुर ध्यान धरो ॥ सिवजी
तिनके रा ॥ ब्रह्मा वेद पढ़ै ॥ य
म्रा मन दीजै ॥ ग्यानी कौ जेरा

मचंद्रकीजै ॥ ८ ॥ सम्रसीद्यारती
कंठसैहीपा ॥ भगतनकरतहार
रहाम्मकवीरा ॥ दूसहरा भक्तक
रा ॥ ठाकुरध्यानधरे ॥ शिवजी
तिरतनकरे ॥ ब्रह्मावेदपढे ॥ प्रम

आ ५

उामलदीजै ॥ आलीकीजैराजा
रामचंद्रकीजै ॥ ७ ॥ अष्टमीआ
रतीलेकाजीतै ॥ रामहृदयेनोआ
वैसवसंतमिलकरमंगलगा
वै ॥ हरदराभमकरो ॥ टाकुरण्वा

नयरो॥शिवजीतिरत्नकरो॥व
लावेदपड़ा॥यमद्यासनदीजे
राजारामचंद्रकौजै॥५॥नवमी
ग्रातीसीतालयाई॥समसरु
दकौवाजावजै॥वादसराय

नं ८६

आ
९

देवोवनखोनेन्द्रहासापमक
रो॥५॥टाकुरध्यानधरो॥शिव
जीनिरनकरो॥बलावेदप
रो॥यमव्रासमनहीवे ग्रावली
केजैजारामचंद्रकोजै॥६॥

। इति आरती सम्पूर्ण



6

नं ७६